FACULTY OF LANGUAGES

SYLLABUS

of

Maters of Arts in Hindi

(Semester I)

(Under Credit Based Continuous Evaluation Grading System)

Session: 2022-23

The Heritage Institution

KANYA MAHA VIDYALAYA JALANDHAR (Autonomous)

Masters of Arts (Hindi)

Session 2022-23

Programme Specific outcomes-

PSO-1: भाषा उच्चारण में निपुणता , व्याकरण सम्बन्धी अवधारणा की स्पष्टता |

PSO-2: प्राचीन एवं नवीन हिन्दी कवियों की देन के गहन ज्ञान की प्राप्ति |

PSO-3: हिन्दी के भाषिक और साहित्यिक रूप के साथ साथ उसके प्रयोजनमूलक रूपों – बैंक, रेलवे , समाचार पत्र , रेडियो , टेलीविज़न , मीडिया , अनुवाद की जानकारी एवं रोज़गार के अवसर |

PSO-4: भारतीय और पाश्चात्य काव्यशास्त्र की अवधारणा, विभिन्न समीक्षा पद्धतियों का सम्यक ज्ञान| रस, शब्द शक्तियों और विविध वादों का गहन अध्ययन |

PSO-5: भाषा और भाषा विज्ञान, समाज विज्ञान , मनोभाषा विज्ञान , शैलीविज्ञान , रूपांतरण प्रजनक , व्यवस्था परक एवं प्रकार्य परक व्याकरण की समस्त जानकारी एवं भाषा वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में साहित्य का विश्लेषण करने का सम्पूर्ण ज्ञान |

PSO-6: देवनागरी लिपि का ज्ञान , समास, सन्धि, उपसर्ग , प्रत्यय , लिंग, वचन, कारक की व्यावहारिक जानकारी |

PSO-7: कोश निर्माण के सिद्धांत, प्रक्रिया , विभिन्न कोश ग्रन्थ और विभिन्न कोशकारों का सामान्य परिचय एवं व्यावहारिक ज्ञान में दक्षता |

PSO-8: हिन्दी की प्रयोजन मूलकता को सिद्ध करती पत्रकारिता के क्षेत्र की सैद्धान्तिक और व्यावहारिक जानकारी , सम्पादन , प्रूफ पठन, समाचार लेखन व वाचन , उद्घोषणा: लेखन व वाचन, संवाद , विज्ञापन, फीचर , रिपोर्ताज , पटकथा , डाक्यूमेंट्री , नाटक लेखन का व्यावहारिक ज्ञान |

PSO-9: राजभाषा शिक्षण के अंतर्गत राजभाषा के अधिनियम , राष्ट्रपति के आदेशों संवैधानिक नियमों की सम्पूर्ण जानकारी और कार्यालयी टिप्पण , प्रारूपण , संक्षेपण , विस्तारण, पत्र लेखन एवं पारिभाषिक शब्दावली निर्माण के सिद्धांत की विस्तृत जानकारी |

KANYA MAHA VIDYALAYA,JALANDHAR(AUTONOMOUS)

SCHEME AND CURRICULAM OF EXAMINATION
OF TWO YEAR DEGREE PROGRAMME
CREDIT BASED CONTINUOUS EVALUATION
GRADING SYSTEM (CBCEGS)
Session 2022-23
Programme: Masters of Arts in Hindi
(Semester I)

Master of Arts (Hindi) Semester I										
Course Code	**Course Name**	**Course Type**	**Hrs/ Weeks**	**Credits L.T.P**		**Marks**				**Examination time (in Hours)**
					Total Credits	**Total**	**Ext.**			
							L	**P**	**CA**	
MHIL-1261	प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य	C	4	4-0-0	4	80	64	-	16	3
MHIL -1262	हिन्दी साहित्य का इतिहास (खंड- एक)	C	4	4-0-0	4	80	64	-	16	3
MHIL -1263	भारतीय काव्यशास्त्र एवं साहित्यालोचन	C	4	4-0-0	4	80	64	-	16	3
MHIL - 1264	प्रयोजनमूलक हिन्दी	C	4	4-0-0	4	80	64	-	16	3
MHIL - 1265(Opt---) (विद्यार्थी अग्रलिखित विकल्पों में से कोई एक विकल्प चुन सकता है)	हिन्दी नाटक और रंगमंच (Opt-i)	O	4	4-0-0	4	80	64	-	16	3
	कोश विज्ञान (Opt-ii)	O	4	4-0-0	4	80	64	-	16	3
	पंजाब का मध्यकालीन हिन्दी साहित्य (Opt-iii)	O	4	4-0-0	4	80	64	-	16	3
(विद्यार्थी अग्रलिखित अन्तर्ज्ञानानुशास्नात्मक (interdisciplinary) विकल्पों में से कोई एक विकल्प चुन सकता है)		**IDE**	**4**		4	100	80	-	20	3

Total		**24**	**20**		400				
IDEC-1101 IDEM-1362 IDEH-1313 IDEI-1124 IDEW-1275	Effective Communication Skills Basics of Music(Vocal) Human Rights And Constitutional Rights Basics of Computer Applications Indian Heritage : Contribution to the world (Credits of these courses will not be added to SGPA)								

C-Compulsory
O-Optional
IDE-Inter Disciplinary Elective Course
IDC- Inter Disciplinary compulsory Course

Masters of Arts (HINDI) (Semester-I)

Session 2022-23

Course Code: MHIL - 1261

प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

Course Outcomes :

पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के उपरान्त विद्यार्थी निम्नलिखित लाभ प्राप्त कर सकते हैं :

CO-1: हिन्दी के आदिकालीन तथा मध्कालीन कवियों के काव्य-सौन्दर्य को जान सकेंगे और अमीर खुसरो, कबीर और जायसी के काव्य की व्याख्या से परिचित होंगे

CO-2 : इस इकाई में विद्यार्थी अमीर खुसरो के साहित्य के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं तथा उनका हिंदी साहित्य में योगदान सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त कर सकते है|

CO-3: वे कवि कबीर की वाणी के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं तथा भक्त कवियों का हिन्दी साहित्य में योगदान सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त कर सकते है|

CO-4: वे सूफी काव्य परम्परा के शीर्षस्थ कवि जायसी के पद्मावत की प्रेम अभिव्यंजना,लोकसंस्कृति और नागमती के वियोग वर्णन की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं |

Masters of Arts (HINDI) (Semester-I)

Session 2022 -23

Course Code: MHIL - 1261

प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

Total: 80
CA: 16
TH: 64

समय: तीन घंटे
LTP – 4-0-0

परीक्षक के लिए आवश्यक निर्देश :

यह प्रश्न पत्र पांच भागों में विभाजित है| प्रथम भाग अनिवार्य है जो सप्रसंग व्याख्या से सम्बन्धित है| इसमें पाठयक्रम में निर्धारित कवियों के काव्य से सम्बन्धित चार- चार अंकों के सप्रसंग व्याख्या के छ: प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें चार का उत्तर देना अनिवार्य होगा| प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 200 शब्दों में देना होगा| भाग दो,तीन, चार ,पांच में समानुपात से क्रमश: इकाई दो,तीन,चार में से 12-12 अंकों के कुल आठ प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से परीक्षार्थी को प्रत्येक भाग में से एक- एक प्रश्न का उत्तर देना होगा| प्रत्येक उत्तर 800 शब्दों में देना होगा|

इकाई –एक

व्याख्या

निर्धारित कवि एवं पाठ्य पुस्तक:

पाठ्य पुस्तक – 'काव्य मंजूषा' सम्पादक प्रो॰ सुधा जितेन्द्र ,राजकमल प्रकाशन ,नई दिल्ली ,2014
व्याख्या के लिए निर्धारित कवि-

1.अमीर खुसरो
2.कबीर
3.जायसी

इकाई –दो

विवेचन हेतु निर्धारित परिक्षेत्र :-

अमीर खुसरो

- अमीर खुसरो और उनका काव्य: परिचय तथा विशेषताएं
- हिंदी के आदि कवि :अमीर खुसरो
- अमीर खुसरो के काव्य की मूल संवेदना
- अमीर खुसरो के काव्य की भाषा

इकाई –तीन

विवेचन हेतु निर्धारित परिक्षेत्र :-

कबीर

- कबीर और उनका काव्य परिचय तथा विशेषताएं
- कबीर काव्य का दार्शनिक पक्ष
- क्रांतिकारी कवि कबीर
- कबीर का सामाजिक दृष्टिकोण
- कबीर का रहस्यवाद
- कबीर काव्य का कलात्मक पक्ष
- कबीर की भक्ति भावना

इकाई –चार

विवेचन हेतु निर्धारित परिक्षेत्र :-

जायसी

- जायसी और उनका काव्य: परिचय तथा विशेषताएं
- सूफी काव्य परम्परा में जायसी का स्थान
- जायसी की प्रबन्ध योजना ,पद्मावत का महाकाव्यत्व
- जायसी के काव्य में विरह वर्णन : नागमती का विशेष सन्दर्भ
- जायसी के काव्य में प्रेमाभिव्यंजना एवं रहस्य
- जायसी के काव्य में लोक संस्कृति
- पद्मावत का काव्य सौष्ठव

सहायक पुस्तकें :

1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल हिंदी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।
2. गोपीचंद नारंग, अमीर खुसरो का हिंदी काव्य, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।
3. रामनिवास चंडक, कबीर :जीवन और दर्शन, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।
4. परशुराम चतुर्वेदी, कबीर साहित्य चिंतन, स्मृति प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. नज़ीर मुहम्मद, कबीर के काव्य रूप, भारत प्रकाशन, अलीगढ ।
6. रघुवंश, कबीर एक नई दृष्टि, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
7. रामकुमार वर्मा, कबीर एक अनुशीलन, साहित्य भवन, इलाहाबाद।
8. मनमोहन गौतम, पद्मावत का काव्य वैभव, मैकमिलन कंपनी, दिल्ली ।
9. रामपूजन तिवारी, जायसी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली ।
10. शिवसहाय पाठक, हिंदी सूफी काव्य का समग्र अनुशीलन, राजकमल प्रकाशन ,नई दिल्ली ।
11. जयदेव , सूफी महाकवि जायसी, भारत प्रकाशन मंदिर, अलीगढ ।
12. डॉ.हरमहेन्द्र सिंह बेदी, कालजयी कबीर, गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी, अमृतसर ।

Masters of Arts (HINDI) (Semester-I)

Session 2022-23

Course Code: MHIL-1262

हिंदी साहित्य का इतिहास (खंड-एक)

Course Outcomes :

इस पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी निम्नांकित दृष्टि से योग्य होंगे :

CO-1 : इस पाठ्यक्रम में विद्यार्थी साहित्य के इतिहास के अर्थ और साहित्य इतिहास लेखन की परम्परा से परिचित होंगें |

CO-2 : आदिकाल के नामकरण और सीमा निर्धारण जैसे विवादित एवं अनिर्णीत विषयों के प्रति सजग होने के साथ आदिकाल की प्रमुख काव्य प्रवृतियों से अवगत होंगें|

CO-3 : भक्तिकाल की पृष्ठभूमि और सगुण-निर्गुण काव्यधाराओं में प्रमुख गौण कवियों और काव्य प्रवृत्तियों को समझेंगे |

CO-4 : रीतिकाल की परिस्थितियों एवं प्रमुख एवं गौण काव्य प्रवृत्तियों से अवगत होंगें |

Masters of Arts (HINDI) (Semester-I)

Session 2022-23

Course Code: MHIL-1262

Course Title: हिन्दी साहित्य का इतिहास (खण्ड- एक)

Total: 80
CA: 16
TH: 64

समय: तीन घंटे
LTP – 4-0-0

परीक्षक के लिए आवश्यक निर्देश:
यह प्रश्न पत्र पांच भागों में विभाजित है । प्रथम भाग अनिवार्य है। प्रथम भाग में सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में से चार-चार अंकों के छ: प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें चार का उत्तर देना अनिवार्य होगा । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 200 शब्दों में देना होगा ।भाग दो, तीन, चार, पांच में समानुपात से क्रमशः इकाई एक, दो, तीन, चार में से 12-12 अंकों के कुल आठ प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से परीक्षार्थी को प्रत्येक भाग में से एक-एक प्रश्न का उत्तर देना होगा । प्रत्येक उत्तर 800 शब्दों में देना होगा ।

इकाई – एक

इतिहास दर्शन:
-साहित्येतिहास लेखन:अर्थ एवं अभिप्राय ।
-हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा ।
-हिंदी साहित्य का इतिहास:काल विभाजन, सीमा निर्धारण और नामकरण|

इकाई – दो

आदिकाल:
-आदिकाल की पृष्ठभूमि, नामकरण की समस्या, विभिन्न परिस्थितियां,
साहित्यिक प्रवृत्तियां
-सिद्ध, नाथ, जैन साहित्य (सामान्य परिचय)
-रासो काव्य , प्रमुख प्रवृत्तियां
-लौकिक काव्य धारा: परिचय एवं प्रवृत्तियां
-प्रमुख कवि (चंदबरदाई, जगनिक, अमीर खुसरो, विद्यापति :व्यक्तित्व एवं कृतित्व परिचय)

इकाई-तीन

-भक्तिकाल: पृष्ठभूमि एवं प्रवृत्तियां
- निर्गुण एवं सगुण काव्यधारा: प्रमुख विशेषताएं ।
-प्रमुख एवं गौण कवि: (कबीर, रविदास, दादू, सुंदरदास, कुतुबन, मंझन, जायसी, तुलसीदास, सूरदास, नंददास)
-भक्तेतर काव्य: प्रमुख कवि और उनका रचनागत वैशिष्ट्य ।

इकाई- चार

-रीतिकाल: नामकरण और काल सीमा निर्धारण
-उत्तरमध्यकाल पृष्ठभूमि एवं प्रवृत्तियां
-रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त काव्यधाराओं का परिचय एवं प्रवृत्तियां
-प्रमुख एवं गौण कवि: (केशव, बिहारी, देव, मतिराम, घनानंद, बोधा, आलम, ठाकुर, गुरु गोबिंद सिंह, रज्जबदास)

सहायक पुस्तकें:

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आ. रामचंद्र शुक्ल, काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास, संपादक डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ।
3. रीतिकाव्य की भूमिका: डॉ. नगेन्द्र
4. साहित्य इतिहास का दर्शन, आचार्य नलिन विलोचन शर्मा, बिहार राष्ट्र परिषद्, पटना ।
5. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, डॉ. रामकुमार वर्मा, रामनारायण बेणी माधव, इलाहाबाद ।
6. हिन्दी साहित्य का अतीत, भाग-1,2,3 प. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, ब्रह्मनाल, वाराणसी ।
7. हिन्दी साहित्य का बृहत इतिहास (भाग-1 से 16), नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।
8. हिन्दी साहित्य का इतिहास, हुकुमचंद राजपाल, विकास पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ।
9. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली ।
10. साहित्य और इतिहास दृष्टि: मैनेजर पांडेय
11. मध्यकालीन बांध का स्वरूप: हजारी प्रसाद द्विवेदी ।
12. हिन्दी साहित्य का अतीत (भाग 1,2): विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ।
13. हिन्दी साहित्य का इतिहास: पूरनचंद टंडन, विनीता कुमारी ।
14. आदिकालीन हिन्दी साहित्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि: राममूर्ति त्रिपाठी ।

Masters of Arts (HINDI) (Semester-I)

Session 2022-23

Course Code: MHIL-1263

Course Title:भारतीय काव्यशास्त्र एवं साहित्यालोचन

Course Outcomes :

इस पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी निम्नांकित दृष्टि से योग्य होंगे :

CO-1 : भारतीय काव्यशास्त्र में हम साहित्य एवं समीक्षा के सम्बन्ध में विद्वान आचार्यों के द्वारा दिए गये मतों एवं सिद्धांतों के क्रमिक विकास ,साहित्य पर उनके प्रभाव ओर उनके योगदान तथा उनकी सीमाओं की जानकारी प्राप्त करते हैं |

CO-2 : रस आंतरिक आनंदानुभूति है तो अलंकार बाह्य सौन्दर्य-विधान |रस का व्यावहारिक ज्ञान अगर विद्यार्थियों की आंतरिक गहनता को परखने में सहायक होगा तो अलंकार उनके मन के कल्पनात्मक तत्वों को सक्षमता प्रदान करेंगे |

Co-3 : ध्वनि, रीति और वक्रोक्ति का ज्ञान विद्यार्थियों को रचनात्मक अभिव्यक्ति में परोक्ष एवं सूक्ष्म भूमिका निभाने वाले तत्वों की जानकारी उन्हें सैद्धांतिक ज्ञान ओर व्यावहारिक कौशल दोनों प्रदान करती है |

CO-4 : विद्यार्थियों को औचित्य सिद्धांत की जानकारी प्राप्त होगी एवं वे आलोचना की विभिन्न प्रवृत्तियों के बारे में जान सकेंगे |

Masters of Arts (HINDI) (Semester-I)

Session 2022-23

Course Code: MHIL-1263

Course Title: भारतीय काव्यशास्त्र एवं साहित्यालोचन

Total: 80
CA: 16
TH : 64

समय : तीन घंटे
LTP – 4-0-0

परीक्षक के लिए आवश्यक निर्देश :

यह प्रश्न पत्र पांच भागों में विभाजित है । प्रथम भाग अनिवार्य है । प्रथम भाग में सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में से चार-चार अंकों के छ : प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें चार का उत्तर देना अनिवार्य होगा । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 200 शब्दों में देना होगा । भाग दो, तीन, चार, पांच में समानुपात से क्रमशः इकाई एक, दो, तीन, चार में से 12-12 अंकों के कुल आठ प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से परीक्षार्थी को प्रत्येक भाग में से एक-एक प्रश्न का उत्तर देना होगा । प्रत्येक उत्तर 800 शब्दों में देना होगा ।

इकाई – एक

काव्य :

काव्य-लक्षण, काव्य तत्व, काव्य-हेतु, काव्य प्रयोजन, काव्य के प्रकार ।

इकाई – दो

रस सम्प्रदाय : रस का स्वरुप ,रस के अंग,रस-निष्पत्ति, साधारणीकरण, सहृदय की अवधारणा ।
अलंकार सम्प्रदाय : परम्परा और मूल स्थापनाएँ, अलंकारों का वर्गीकरण ।

इकाई – तीन

ध्वनि सम्प्रदाय : ध्वनि का स्वरूप, ध्वनि-सिद्धान्त की स्थापनाएं, ध्वनि काव्य के प्रमुख भेद ।
रीति सिद्धांत : रीति की अवधारणा, रीति सिद्धांत की प्रमुख स्थापनाएं, काव्य गुण, रीति एवं शैली ।
वक्रोक्ति सिद्धांत : वक्रोक्ति की अवधारणा एवं मान्यताएं, वक्रोक्ति के भेद |

इकाई – चार

औचित्य सिद्धांत : औचित्य से अभिप्राय, औचित्य का स्वरूप एवं भेद, प्रमुख स्थापनाएं, काव्य में औचित्य का स्थान एवं महत्व ।

हिन्दी आलोचना की प्रमुख प्रवृत्तियां : शास्त्रीय, तुलनात्मक, मनोविश्लेषणवादी, शैलीवैज्ञानिक और समाजशास्त्रीय ।

सहायक पुस्तकें :

1. पाश्चात्य काव्यशास्त्र: देवेन्द्र नाथ शर्मा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ।
2. आलोचक और आलोचना: बच्चन सिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी ।
3. हिंदी समीक्षा: स्वरूप और सन्दर्भ, रामदरश मिश्र, मैकमिलन कम्पनी, दिल्ली ।
4. आधुनिक हिंदी समीक्षा-प्रकीर्णक से पद्धति तक, यदुनाथ सिंह, आर्य प्रकाशन मंडल, दिल्ली ।
5. हिंदी आलोचना का सिद्धान्त, मक्खन लाल शर्मा, शब्द और शब्द प्रकाशन, दिल्ली ।
6. भारतीय समीक्षा सिद्धांत, सूर्य नारायण द्विवेदी, संजय बुक सैंटर, वाराणसी ।
7. भारतीय साहित्य दर्शन, सत्यदेव चौधरी, साहित्य सदन, देहरादून ।
8. भारतीय काव्यशास्त्र, भागीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी ।
9. काव्यशास्त्र, भागीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी ।
10. रस सिद्धांत की दार्शनिक एवं नैतिक व्याख्याएं, तारकनाथ बाली, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा ।

Masters of Arts (HINDI) (Semester-I)

Session 2022-23

Course Code: MHIL-1264

Course Title:प्रयोजनमूलक हिंदी

Course Outcomes :

CO-1: इकाई एक के द्वारा विद्यार्थी भाषा के विभिन्न रूपों से परिचित होंगे | कार्यालय में प्रयुक्त कार्यप्रणाली व कामकाजी हिंदी के रूपों संक्षेपण,पल्लवन,प्रारूपण,पत्रलेखन व टिप्पण लेखन की विशेष जानकारी प्राप्त होगी |

CO-2:ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों की पारिभाषिक शब्दावली एवं इसी से सम्बन्धित सैद्धांतिकी का ज्ञान प्राप्त होगा |

CO-3:कम्प्यूटर से यद्यपि कोई परिचित नहीं परन्तु सैद्धांतिक रूप से इसकी विस्तृत जानकारी विद्यार्थी अर्जित कर सकता है | इस इकाई के अध्ययन के माध्यम से विद्यार्थी इंटरनेट से की जाने वाली ई मेल, लिंक,डाउनलोडिंग की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं |

CO-4:इस इकाई से विद्यार्थी कार्यालयी टिप्पणियों के हिन्दी रूपों के सम्बन्ध में तथा कम्प्यूटर शब्दों के हिंदी रूपों का परिचय प्राप्त कर अपने ज्ञान में वृद्धि करेंगे |

Masters of Arts (HINDI) (Semester-I)

Session 2022-23

Course Code: MHIL-1264

Course Title: प्रयोजनमूलक हिन्दी

Total: 80
CA: 16
TH : 64

समय : तीन घंटे
LTP- 4-0-0

परीक्षक के लिए आवश्यक निर्देश :

यह प्रश्न पत्र पांच भागों में विभाजित है । प्रथम भाग अनिवार्य है । प्रथम भाग में सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में से चार -चार अंकों के छ : प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें चार का उत्तर देना अनिवार्य होगा । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 200 शब्दों में देना होगा । भाग दो , तीन , चार , पांच में समानुपात से क्रमशः इकाई एक, दो, तीन, चार में से 12-12 अंकों के कुल आठ प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से परीक्षार्थी को प्रत्येक भाग में से एक-एक प्रश्न का उत्तर देना होगा । प्रत्येक उत्तर 800 शब्दों में देना होगा ।

इकाई – एक

पाठ्य विषय :

कामकाजी हिन्दी
-हिंदी के विभिन्न रूप-संचार : भाषा, राजभाषा, माध्यम भाषा, मातृभाषा, सर्जनात्मक भाषा ।

-कार्यालयी हिंदी (राजभाषा) के प्रमुख रूप : संक्षेपण, पल्लवन, प्रारूपण, पत्रलेखन, टिप्पण ।

संक्षेपण : अभिप्राय:,परिभाषा,महत्त्व, संक्षेपण व अन्य रचना रूप, संक्षेपण के आवश्यक तत्व, संक्षेपण विधि |

पल्लवन : अभिप्राय ,परिभाषा,महत्त्व एवं उपयोगिता, पल्लवन के गुण/विशेषताएं,पल्लवन के अन्य स्वतंत्र रूप,पल्लवन की विधि |

प्रारूपण : परिचय,परिभाषा,आवश्यकता व महत्त्व ,प्रारूपण की विधि/अंग,प्रारूपण के प्रकार,अच्छे प्रारूपण की विशेषताएं |

पत्रलेखन : पत्रलेखन का महत्त्व,अच्छे पत्र की विशेषताएं,पत्र के प्रकार |

टिप्पण : अभिप्राय,टीप-टिप्पणी व टिप्पण में अंतर,टिप्पण की परिभाषा,उद्देश्य,टिप्पण लेखन की विधि, टिप्पण के प्रकार अच्छे टिप्पण की विशेषताएं |

-पारिभाषिक शब्दावली -स्वरूप एवं महत्व, पारिभाषिक शब्दावली :परिभाषा, पारिभाषिक शब्दावली के गुण व विशेषताएं |

-ज्ञान विज्ञान के क्षेत्रों की पारिभाषिक शब्दावली निर्धारित क्षेत्र: बैंक, रेलवे, कम्प्यूटर और सामान्य प्रशासनिक शब्दावली 228 से 229 तक
निर्धारित पुस्तक: हिन्दी भाषा प्रयोजनमूलकता एवं आयाम, वागीश प्रकाशन, जालंधर, 2005

इकाई – दो

-हिंदी कंप्यूटिंग: कम्प्यूटर: परिचय,परिभाषा,विशेषताएं,उपयोगिता,क्षेत्र,कम्प्यूटर के प्रकार|

- कम्प्यूटर : परिचय उपयोग तथा क्षेत्र|

-इंटरनेट : संपर्क उपकरणों का परिचय, प्रकार्यात्मक रख-रखाव एवं इंटरनेट : समय मितव्ययिता के सूत्र ।

-वेब पब्लिशिंग ।

इकाई – तीन

-इंटरनेट एक्स्प्लोरर अथवा नेटस्केप नेवीगेटर

-लिंक, ब्राउज़िंग, ई-मेल भेजना/प्राप्त करना, हिन्दी के प्रमुख इंटरनेट पोर्टल, डाउनलोडिंग व

अपलोडिंग, हिन्दी सॉफ्टवेयर, पैकेज ।

इकाई – चार

कार्यालयी टिप्पणियों के हिन्दी रूप सम्बन्धी शब्दावली, पृ.73-76 तक, कम्प्यूटर शब्दावली, पृ.144- 147 तक ।

परिभाषिक शब्दावली, कार्यालयी टिप्पणियों व कम्प्यूटर शब्दावली हेतु अनुशंसित पुस्तक-हिन्दी भाषा प्रयोजनमूलकता एवं आयाम, वागीश प्रकाशन, जालंधर, संस्करण- 2005।

सहायक पुस्तकें:

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी- विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।
2. प्रयोजनमूलक हिन्दी:सिद्धांत और प्रयोग दंगल झाल्टे, विद्या विहार, नई दिल्ली ।
3. राजभाषा विविध, माणिक मृगेश, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।
4. ज्ञान शिखा (प्रयोजनमूलक हिन्दी विशेषांक), संपा. डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित, हिन्दी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय प्रकाशन ।
5. अनुवाद प्रकिया, डॉ. रीता रानी पालीवाल, साहित्य निधि, दिल्ली ।

6. व्यावहारिक हिन्दी, कैलाशचन्द्र भाटिया, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली ।
7. कंप्यूटर और हिन्दी, डॉ. हरिमोहन, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली ।
8. संक्षेपण और विस्तारण, कैलाशचन्द्र भाटिया, सुमन सिंह प्रभात प्रकाशन, दिल्ली ।
9. प्रयोजनमूलक हिन्दी, रघुनन्दन प्रसाद शर्मा, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी ।
10 प्रयोजनमूलक हिन्दी, संरचना एवं अनुप्रयोग, डॉ. रामप्रकाश, डॉ. दिनेश गुप्त, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली ।
11.प्रयोजनमूलक व्यावहारिक हिन्दी, डॉ. ओमप्रकाश सिंहल, जगत राम प्रकाशन, दिल्ली ।
12 अनुवाद की व्यावहारिक समस्याएं, भोलानाथ तिवारी/ओमप्रकाश गाबा, शरद प्रकाशन, दिल्ली ।
13.राजभाषा हिन्दी, डॉ. कैलाशचन्द्र भाटिया, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।
14.प्रशासनिक कार्यालय की हिन्दी, डॉ. रामप्रकाश/डॉ.दिनेश कुमार गुप्त, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
15.व्यावहारिक हिन्दी, डॉ. रविन्द्रनाथ श्रीवास्तव, डॉ. भोलानाथ तिवारी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली ।
16.प्रयोजनमूलक हिन्दी, कमल कुमार बोस, क्लासिकल पब्लिशिंग, नई दिल्ली ।
17.हिन्दी की मानक वर्तनी कैलाश चन्द्र भाटिया, रचना भाटिया, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली ।
18.कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग : सिद्धांत और तकनीक, राजीव, राजेन्द्र कुमार, साहित्य मंदिर, दिल्ली ।
19.प्रयोजनमूलक हिंदी, डॉ. राजनाथ भट्ट, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला ।

Masters of Arts (HINDI) (Semester-I)

Session 2022-23

Course Code: MHIL-1265

(वैकल्पिक अध्ययन)

विकल्प –एक

हिंदी नाटक और रंगमंच

Course Outcomes :

CO-1 : नाटक हिंदी गद्य साहित्य की अन्यतम विधा है | इस प्रश्नपत्र के माध्यम से विद्यार्थी आधुनिक काल में भारतेंदु युग के नाटकों के विकास तथा रंगमंच के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं तथा महान नाटककारों भारतेंदु, जयशंकर प्रसाद तथा लक्ष्मीनारायण लाल का अध्ययन करेंगे | प्रथम इकाई में विद्यार्थी नाटकों की व्याख्या करने में सक्षम होंगे |

CO-2 : भारतेंदु युग के नाटककारों ने लोक चेतना के विकास के लिए नाटकों की रचना की ताकि उस समय की सामाजिक समस्याओं को नाटकों में अभिव्यक्त किया जा सके | द्वितीय इकाई में विद्यार्थी भारतेंदु कृत नाटक 'अंधेर नगरी' का गहन अध्ययन करेंगे |

CO-3 : तृतीय इकाई के माध्यम से विद्यार्थी जयशंकर प्रसाद के नाटक 'ध्रुवस्वामिनी' का गहन अध्ययन करेंगें तथा ऐतिहासिक नाटकों के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगें |

CO-4 : चतुर्थ इकाई के माध्यम से विद्यार्थी सुरेन्द वर्मा कृत 'आठवाँ' सर्ग नाटक का अध्ययन करेंगें| यह प्रश्नपत्र विद्यार्थियों की रंगमंच के प्रति रूचि उत्पन्न करेगा और उनकी सृजनात्मक क्षमता को उभरने में मदद करेगा |

Masters of Arts (HINDI)(Semester-I)

Session 2022-23

Course Code: MHIL-1265

वैकल्पिक अध्ययन

विकल्प –एक

Course Title: हिन्दी नाटक और रंगमंच

Total: 80
CA: 16
TH : 64

समय : तीन घंटे
LTP- 4-0-0

परीक्षक के लिए आवश्यक निर्देश :

यह प्रश्न पत्र पांच भागों में विभाजित है । प्रथम भाग अनिवार्य है । प्रथम भाग में सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में से चार–चार अंकों के सप्रसंग व्याख्या सम्बन्धी छ : प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें चार की सप्रसंग व्याख्या करना अनिवार्य होगा । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 200 शब्दों में देना होगा । भाग दो, तीन, चार, पांच में समानुपात से क्रमशः इकाई दो, तीन, चार में से 12-12 अंकों के कुल आठ प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से परीक्षार्थी को प्रत्येक भाग में से एक–एक प्रश्न का उत्तर देना होगा । प्रत्येक उत्तर 800 शब्दों में देना होगा ।

इकाई – एक

व्याख्या एवं अध्ययन के लिय निर्धारित पुस्तकें :

(क) अंधेर नगरी : भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली ।
(ख) ध्रुवस्वामिनी : जयशंकर प्रसाद, प्रसाद प्रकाशन, वाराणसी ।
(ग) आठवां सर्ग : सुरेन्द्र वर्मा , राधाकृष्णन प्रकाशन ,दिल्ली ।

इकाई – दो

भारतेंदु का रंगमंच : सामर्थ्य और सीमाएं
पारसी रंगमंच, पृथ्वी थियेटर, नुक्कड़ नाटक, रेडियो नाटक
भारतेंदु की नाट्य चेतना
अंधेर नगरी का मुख्य सन्दर्भ
अंधेर नगरी में भारतेंदु युगीन विसंगतियों की अभिव्यक्ति
अंधेर नगरी में यथार्थ बोध

अंधेर नगरी में व्यंग्य भाषा, शैली
अंधेर नगरी का नाट्य शिल्प, प्रतीक विधान ।

इकाई – तीन

जयशंकर प्रसाद : नाट्य यात्रा में ध्रुवस्वामिनी का महत्वाँकन
ध्रुवस्वामिनी: इतिहास और कल्पना का योग
ध्रुवस्वामिनी: राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना
ध्रुवस्वामिनी: रंगमंचीयता
ध्रुवस्वामिनी: पात्र परिकल्पना, गीत योजना, भाषा-शैली
ध्रुवस्वामिनी: ध्रुवस्वामिनी का प्रबंधकीय एवं राजनीतिक कौशल

इकाई – चार

सुरेन्द्र वर्मा : नाट्ययात्रा में 'आठवां सर्ग'
आठवां सर्ग : शीर्षक की सार्थकता एवं प्रासंगिकता
आठवां सर्ग : समस्या चित्रण, श्लीलता अश्लीलता का प्रश्न
आठवां सर्ग : अभिनेयता
आठवां सर्ग : पात्र परिकल्पना
आठवां सर्ग : गीत योजना, भाषा शैली

सहायक पुस्तकें :

1. भारतीय रंगमंच का विवेचनात्मक इतिहास, डॉ. अज्ञात, पुस्तक संस्थान, कानपुर ।
2. पारसी हिंदी रंगमंच, लक्ष्मीनारायण लाल, राजपाल एंड संस, दिल्ली ।
3. भारतेंदु हरिश्चन्द्र, रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली ।
4. नाटककार भारतेंदु की रंग कल्पना, सत्येन्द्र तनेजा, भारतीय भाषा प्रकाशन, दिल्ली ।
5. प्रसाद के नाटकों का पुनर्मूल्यांकन, सिद्धनाथ कुमार, ग्रन्थथम्, कानपुर ।
6. सुरेन्द्र वर्मा के नाटकों में परंपरा और आधुनिकता बोध ।
7. सुरेन्द्र वर्मा के नाटकों की विषय वस्तु , केवल कृष्ण घोड़ेला, दिल्ली ।

Masters of Arts (HINDI) (Semester-I)

Session 2022-23

Course Code: MHIL-1265

वैकल्पिक अध्ययन

विकल्प–दो

कोश विज्ञान

Course Outcomes :

इस पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी निम्नांकित दृष्टि से योग्य होंगे :

CO-1: कोश विज्ञान की उत्पत्ति ,अर्थ, पर्याय , विलोम आदि जानने का सबसे सरल , उपयोगी एवं अनुकरणीय माध्यम है |

CO-2: इस प्रश्नपत्र में विद्यार्थी कोश की उपयोगिता, कोश के भेद और कोश और व्याकरण के अंतर्संबंध के बारे में व्यापक जानकारी प्राप्त कर सकता है |

CO-3: कोश के निर्माण की प्रक्रिया, कोश के प्रकार , कोश निर्माण में आने वाली कठिनाइयों के बारे में ज्ञान अर्जित कर सकता है |

CO-4: कोश विज्ञान के साथ ध्वनि,व्याकरण व्युत्पति शास्त्र और अर्थ विज्ञान का गहन अध्ययन – विश्लेषण करने में सक्षम हो सकता है |

Masters of Arts (HINDI) (Semester-I)

Session 2022-23

Course Code: MHIL-1265

वैकल्पिक अध्ययन

विकल्प – दो

कोश विज्ञान

Total: 80
CA: 16
TH : 64

समय : तीन घंटे
LTP- 4-0-0

परीक्षक के लिए आवश्यक निर्देश :

यह प्रश्न पत्र पांच भागों में विभाजित है । प्रथम भाग अनिवार्य है। प्रथम भाग में सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में से चार-चार अंकों के छ : प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें चार का उत्तर देना अनिवार्य होगा । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 200 शब्दों में देना होगा । भाग दो, तीन, चार, पांच में समानुपात से क्रमशः इकाई एक, दो, तीन, चार में से 12-12 अंकों के कुल आठ प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से परीक्षार्थी को प्रत्येक भाग में से एक-एक प्रश्न का उत्तर देना होगा । प्रत्येक उत्तर 800 शब्दों में देना होगा ।

इकाई – एक

पाठ्य विषय :

कोश, परिभाषा और स्वरूप, कोश की उपयोगिता, कोश और व्याकरण का अंत : सम्बन्ध ।

इकाई – दो

कोश के भेद- समभाषी, द्विभाषी और बहुभाषी कोश, एककालिक और कालक्रमिक कोश, पारिभाषिक कोश, व्युत्पत्ति कोश, समांतर कोश, अध्येताकोश, विश्वकोश , बोलीकोश।

इकाई – तीन

कोश- निर्माण की प्रक्रिया : सामग्री संकलन, प्रवृष्टिक्रम, व्याकरणिक कोटि, उच्चारण, व्युत्पति, अर्थ, पर्याय, चित्र प्रयोग, उप-प्रवृष्टियां संक्षिप्तियां, सन्दर्भ और प्रतिसंदर्भ ।
रूप अर्थ सम्बन्ध : अनेकार्थकता, समनार्थकता, समनामता, समध्वन्यात्मकता, विलोमता ।

इकाई – चार

-कोश निर्माण की समस्याएं : समभाषी, द्विभाषी और बहुभाषी कोशों के संदर्भ में, अलिखित भाषाओँ का कोश-निर्माण ।

-कोशविज्ञान और विषयों का सम्बन्ध : कोशविज्ञान और स्वनविज्ञान, व्याकरण, व्युत्पत्ति शास्त्र और अर्थविज्ञान का सम्बन्ध ।

सहायक पुस्तकें :

1.डॉ. भोलानाथ तिवारी, कोश और उसके प्रकार, दिल्ली : साहित्य सहकार।

2.डॉ. कामेश्वर शर्मा, हिन्दी की समस्याएं, पटना :नोवेल्टी एंड कम्पनी ।

3.कोश विज्ञान,प्रकाशन केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा ।

4.डॉ. हेमचन्द्र जोशी, हिंदी के कोष और कोशशास्त्र के सिद्धांत-राजर्षि अभिनन्दन ग्रंथ, दिल्ली: प्रथम संस्करण ।

Masters of Arts (HINDI) (Semester-I)

Session 2022-23

Course Code: MHIL-1265

वैकल्पिक अध्ययन

विकल्प –तीन

पंजाब का मध्यकालीन हिंदी साहित्य

Course Outcomes :

इस पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी निम्नांकित दृष्टि से योग्य होंगे :

CO-1 : विद्यार्थी इस प्रश्नपत्र में पंजाब के हिंदी साहित्य की पृष्ठभूमि के बारे में जानेंगे |

CO-2: इतिहास के अतिरिक्त विद्यार्थी , गुरु काव्यधारा , राम काव्यधारा , कृष्ण काव्यधारा व सूफी काव्यधारा के अध्ययन के साथ- साथ गुरुमुखी लिपि में उपलब्ध भक्तिकालीन गद्य साहित्य का ज्ञानार्जन कर सकेगा |

CO-3 : गुरुमुखी लिपि में उपलब्ध दरबारी काव्य तथा श्री मद भगवद गीता के सन्दर्भ में अनुवाद एवं भाष्य का अध्ययन कर सकेगा |

CO-4 : विद्यार्थी चतुर्थ इकाई में जन्म साखी साहित्य, टीकाएँ, अनुवाद एवं भाष्य के बारे मं जानकारी प्राप्त करेंगे |

Masters of Arts (HINDI) (Semester-I)

Session 2022-23

Course Code: MHIL-1265

वैकल्पिक अध्ययन

विकल्प – तीन

Course Title:पंजाब का मध्यकालीन हिन्दी साहित्य

Total: 80
CA: 16
TH : 64

समय : तीन घंटे
LTP – 4-0-0

परीक्षक के लिए आवश्यक निर्देश :

यह प्रश्न पत्र पांच भागों में विभाजित है । प्रथम भाग अनिवार्य है । प्रथम भाग में सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में से चार-चार अंकों के छ : प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें चार का उत्तर देना अनिवार्य होगा । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 200 शब्दों में देना होगा । भाग दो, तीन, चार, पांच में समानुपात से क्रमशः इकाई एक, दो, तीन, चार में से 12-12 अंकों के कुल आठ प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से परीक्षार्थी को प्रत्येक भाग में से एक-एक प्रश्न का उत्तर देना होगा । प्रत्येक उत्तर 800 शब्दों में देना होगा ।

इकाई – एक

अध्ययन के लिए निर्धारित परिक्षेत्र :

पंजाब के हिंदी साहित्य की पृष्ठभूमि, परम्परा, इतिहास और काल विभाजन – नाथ साहित्य, सिद्ध साहित्य तथा लौकिक साहित्य।

इकाई – दो

गुरुमुखी लिपि में उपलब्ध पंजाब का भक्ति हिंदी साहित्य।
गुरु काव्य-धारा
राम काव्य-धारा
कृष्ण काव्य-धारा
सूफी काव्य-धारा
गुरुमुखी लिपि में उपलब्ध भक्तिकालीन हिंदी गद्य

इकाई – तीन

गुरुमुखी लिपि में उपलब्ध दरबारी-काव्य
पटियाला दरबार
संगरूर दरबार

कपूरथला दरबार
नाभा दरबार
गुरु गोबिंद सिंह का विद्या दरबार

इकाई – चार

जन्मसाखी साहित्य (पुरातन जन्मसाखी के संदर्भ में)
टीकाएं (आनंदघन के संदर्भ में)
अनुवाद एवं भाष्य (गीता के संदर्भ में)

सहायक पुस्तकें :

1. पंजाब का हिन्दी साहित्य, डॉ. हरमहेन्द्र सिंह बेदी, डॉ. कुलविन्द्र कौर, मनप्रीत प्रकाशन, दिल्ली ।
2. पंजाब प्रान्तीय हिन्दी साहित्य का इतिहास, चन्द्रकान्त बाली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
3. गुरुमुखी लिपि में हिन्दी काव्य, डॉ. हरिभजन सिंह, भारतीय साहित्य मंदिर, दिल्ली ।
4. गुरुमुखी लिपि में हिन्दी गद्य, डॉ. गोविन्द नाथ राजगुरु, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।
5. गुरु गोबिन्द सिंह के दरबारी कवि, डॉ. भारत भूषण चौधरी, स्वास्तिक साहित्य सदन, कुरुक्षेत्र ।
6. पंजाब हिन्दी साहित्य दर्पण, शमशेर सिंह, 'अशोक' अशोक पुस्तकालय, पटियाला ।

FACULTY OF LANGUAGES

SYLLABUS

of

Maters of Arts in Hindi

(Semester II)

(Under Credit Based Continuous Evaluation Grading System)

Session: 2022-23

The Heritage Institution

KANYA MAHA VIDYALAYA JALANDHAR (Autonomous)

KANYA MAHA VIDYALAYA,JALANDHAR(AUTONOMOUS)
SCHEME AND CURRICULAM OF EXAMINATION
OF TWO YEAR DEGREE PROGRAMME
CREDIT BASED CONTINUOUS EVALUATION
GRADING SYSTEM (CBCEGS)
Session 2022-23
Programme: Masters of Arts in Hindi
(Semester II)

Master of Arts (Hindi) Semester II										
Course Code	**Course Name**	**Course Type**	**Hrs/ Weeks**	**Credits L.T.P**	**Marks**					**Examination time (in Hours)**
					Total Credits	**Total**	**Ext.**			
							L	**P**	**CA**	
MHIL -2261	मध्यकालीन हिन्दी काव्य	C	4	4-0-0	4	80	64	-	16	3
MHIL -2262	हिन्दी साहित्य का इतिहास (खंड- दो)	C	4	4-0-0	4	80	64	-	16	3
MHIL -2263	पाश्चात्य काव्यशास्त्र	C	4	4-0-0	4	80	64	-	16	3
MHIL - 2264	मीडिया लेखन	C	4	4-0-0	4	80	64	-	16	3
MHIL-2265	राजी सेठ : विशेष अध्ययन	C	4	4-0-0	4	80	64	-	16	3
MHIL- 2266 (Opt---) (विद्यार्थी अग्रलिखित विकल्पों में से कोई एक विकल्प चुन सकता है)	नाटककार मोहन राकेश (Opt-i)	O	4	4-0-0	4	80	64	-	16	3
	भारतीय साहित्य (Opt-ii)	O	4	4-0-0	4	80	64	-	16	3
	पंजाब का आधुनिक हिन्दी साहित्य (Opt-iii)	O	4	4-0-0	4	80	64	-	16	3
Total			**24**	**24**		**480**				

C-Compulsory
O-Optional

Masters of Arts (HINDI) (Semester-II)

Session 2022-23

Course Code: MHIL - 2261

मध्यकालीन हिन्दी काव्य

Course Outcomes :

पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के उपरान्त विद्यार्थी निम्नलिखित लाभ प्राप्त कर सकते हैं :

CO-1: इस प्रश्न पत्र में विद्यार्थी 'मध्ययुगीन हिन्दी काव्य के अंतर्गत तुलसी, मीरा जैसे भक्त कवि और रीति कवि बिहारी के काव्य के गूढ़ार्थ से परिचित होंगे।

CO-2: राम काव्य सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त करते हुए तुलसीदास की समन्वय साधना, लोकनायकत्व, भक्ति भावना एवं दार्शनिक सिद्धान्तों का गहन अध्ययन करने में समर्थ होंगे।

CO-3: मीराबाई के काव्य के अध्ययन से विद्यार्थी उनकी भक्ति भावना, दार्शनिक सिद्धांत एवं काव्य सौष्ठव का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

CO-4: रीतिकालीन कवि बिहारी की सतसई के गहन अध्ययन से विद्यार्थी सतसई में वर्णित भक्ति, नीति, श्रृंगार से संबंधित बिहारी के अभिधार्थ, लक्ष्यार्थ एवं व्यंग्यार्थ को समझेंगे।

CO-5: समग्रत: मध्युगीन भक्ति काव्य विद्यार्थियों को नवीन शोध हेतु प्रेरित करने में सक्षम होगा।

Masters of Arts (HINDI) (Semester-II)

Session 2022 - 23

Course Code: MHIL - 2261

मध्यकालीन हिन्दी काव्य

Total: 80
CA: 16

समय: तीन घंटे
LTP- 4-0-0 TH: 64

परीक्षक के लिए आवश्यक निर्देश :

यह प्रश्न पत्र पांच भागों में विभाजित है। प्रथम भाग अनिवार्य है जो सप्रसंग व्याख्या से सम्बन्धित है। इसमें चार- चार अंकों की छ: पद्यांश पूछे जायेंगे जिनमें चार की व्याख्या अनिवार्य होगी |प्रत्येक पद्यांश की व्याख्या 200 शब्दों में देनी होगी। भाग दो ,तीन, चार ,पांच में समानुपात से क्रमश: इकाई दो,तीन,चार में से 12-12 अंकों के कुल आठ प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से परीक्षार्थी को प्रत्येक भाग में से एक-एक प्रश्न का उत्तर देना होगा| प्रत्येक उत्तर 800 शब्दों में देना होगा।

इकाई –एक

व्याख्या व आलोचना के लिए निर्धारित पाठ्य पुस्तक – 'काव्य मंजूषा' सम्पादक प्रो॰ सुधा जितेन्द्र ,राजकमल प्रकाशन ,नई दिल्ली ,2014

व्याख्या के लिए निर्धारित कवि–

1.तुलसीदास
2.मीराबाई
3.बिहारीलाल

इकाई –दो

तुलसीदास और उनका काव्य :परिचय तथा विशेषताएं
तुलसी की समन्वय साधना और लोकनायकत्व
तुलसी की भक्ति भावना
तुलसी के दार्शनिक सिद्धांत
रामचरितमानस का साहित्यिक मूल्यांकन
विनय पत्रिका: मूल प्रतिपाद्य और शिल्प
कवितावली : मूल प्रतिपाद्य

इकाई –तीन

- मीराबाई और उनका काव्य: परिचय तथा विशेषताएं
- मीरा के काव्य के दार्शनिक सिद्धांत
- मीरा के काव्य में भक्ति का स्वरूप
-मीरा की वाणी का काव्य सौष्ठव
- हिंदी कृष्ण काव्य परम्परा में मीरा का स्थान

इकाई –चार

– बिहारी और उनका काव्य: परिचय तथा विशेषताएं
- सतसई परम्परा में बिहारी का स्थान
- बिहारी सतसई : मूल प्रतिपाद्य
- बिहारी सतसई :भक्ति , नीति और श्रृंगार का समन्वय
- बिहारी की अर्थवत्ता
- बिहारी सतसई :काव्य शिल्प

सहायक पुस्तकें:

1. उदयभानु सिंह, तुलसी : दर्शन-मीमांसा ,लखनऊ विश्वविद्यालय,लखनऊ ।
2. राममूर्ति त्रिपाठी ,आगम और तुलसी, मैकमिलन ,नई दिल्ली ।
3. राममूर्ति त्रिपाठी , तुलसी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।
4. बलदेव प्रसाद मिश्र, तुलसी दर्शन, हिंदी साहित्य सम्मलेन, प्रयाग ।
5. रामप्रसाद मिश्र ,तुलसी के अध्ययन की नई दिशाएं, भारतीय ग्रन्थ निकेतन , नई दिल्ली ।
6. रमेश कुंतल मेघ, तुलसी : आधुनिक वातायन से, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली ।
7. रामनरेश वर्मा, हिंदी सगुण काव्य की सांस्कृतिक भूमिका, नागरी प्रचारणी सभा, वाराणसी।
8. विष्णुकांत शास्त्री, तुलसी के हिय हेर, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।
9. हरबंस लाल शर्मा, बिहारी और उनका साहित्य, भारत प्रकाशन मंदिर, अलीगढ।
10. उदयभानु हंस, बिहारी की काव्य कला, रीगल बुक, दिल्ली।
11. जयप्रकाश, बिहारी की काव्य सृष्टि, ऋषि प्रकाशन, कानपुर ।
12. डॉ. बच्चन सिंह,बिहारी का नया मूल्यांकन,हिंदी प्रचारक संस्थान, वाराणसी ।
13. रवीन्द्र कुमार सिंह, बिहारी सतसई: सांस्कृतिक - सामाजिक संदर्भ, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।
14. भगवानदास तिवारी, मीरा की प्रामाणिक पदावली, साहित्य भवन, इलाहाबाद ।
15. महावीर सिंह गहलोत, मीरा: जीवनी और साहित्य ।

Masters of Arts (HINDI) (Semester-II)
Session 2022-23

Course Code: MHIL-2262

हिंदी साहित्य का इतिहास (खंड-दो)

Course Outcomes :

इस पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी निम्नांकित दृष्टि से योग्य होंगे :

CO-1: आधुनिक काल के साहित्य की पृष्ठभूमि में निहित परिस्थितियों की जानकारी प्राप्त करने के साथ-साथ विद्यार्थी इस पाठयक्रम के द्वारा आधुनिक खड़ी बोली साहित्य के जनक भारतेंदु एवं उनके समकालीन साहित्यकारों की विशेषताओं को समझेगें |

CO-2 : द्विवेदी युग एवं छायावाद युग के प्रमुख कवियों एवं काव्य-प्रवृत्तियों का परिचय प्राप्त करेंगे |

CO-3: उत्तरछायावाद युग की प्रमुख काव्य प्रवृत्तियों से अवगत होंगे |

CO-4: आधुनिक हिंदी गद्य की विविध विधाओं के उद्भव और विकास की जानकारी प्राप्त करेंगें |

Masters of Arts (HINDI) (Semester-II)

Session 2022-23

Course Code: MHIL-2262

Course Title: हिन्दी साहित्य का इतिहास (खण्ड दो)

Total: 80
CA: 16
TH: 64

समय: तीन घंटे
LTP- 4-0-0

परीक्षक के लिए आवश्यक निर्देश:

यह प्रश्न पत्र पांच भागों में विभाजित है। प्रथम भाग अनिवार्य है। प्रथम भाग में सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में से चार-चार अंकों के छ: प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें चार का उत्तर देना अनिवार्य होगा। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 200 शब्दों में देना होगा। भाग दो, तीन, चार, पांच में समानुपात से क्रमशः इकाई एक, दो, तीन, चार में से 12-12 अंकों के कुल आठ प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से परीक्षार्थी को एक-एक प्रश्न का उत्तर देना होगा। प्रत्येक उत्तर के लिए निर्धारित शब्द सीमा - 800 शब्द हैं।

इकाई – एक

अध्ययन के लिए निर्धारित परिक्षेत्र:

क) आधुनिक काल की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, सन् 1857 ई. की राज्यक्रांति और पुनर्जागरण।

ख) भारतेन्दु युग: प्रमुख साहित्यकार, रचनाएं और साहित्यिक विशेषताएं।

इकाई – दो

- द्विवेदी युग: प्रमुख प्रवृत्तियां, प्रमुख रचनाकारों का सामान्य परिचय
- छायावाद: पृष्ठभूमि, प्रमुख प्रवृत्तियां, प्रमुख रचनाकारों का परिचय

इकाई – तीन

- उत्तर छायावादी काव्य की विविध प्रवृत्तियाँ – प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता, समकालीन कविता।

इकाई – चार

-नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध एवं आलोचना : उद्भव एवं विकास

-संस्मरण, रेखाचित्र, रिपोतार्ज, जीवनी, आत्मकथा : उद्भव एवं विकास

सहायक पुस्तकें :

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास: रामचंद्र शुक्ल ।
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास, संपादक डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली ।
3. साहित्य का इतिहास दर्शन, आचार्य नलिन विलोचन शर्मा, बिहार राष्ट्र परिषद् , पटना ।
4. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।
5. हिन्दी साहित्य का बृहत् इतिहास – (भाग 1-16), नगरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।
6. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास: बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली ।
7. भारतेंदु मण्डल के समानान्तर और अपूरक मुरादाबाद मण्डल, हरमोहन लाल सूद, वाणी प्रकाशन, दिल्ली ।
8. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास: रामस्वरूप चतुर्वेदी ।
9. हिन्दी काव्य का इतिहास: रामस्वरूप चतुर्वेदी ।
10. हिन्दी कविता का प्रवृत्तिगत इतिहास: पूरनचंद टंडन एवं विनीता कुमारी ।
11. हिन्दी साहित्येतिहास की भूमिका (भाग-3) : सूर्यप्रसाद दीक्षित ।

Masters of Arts (HINDI) (Semester-II)

Session 2022-23

Course Code: MHIL-2263

पाश्चात्य काव्यशास्त्र

Course Outcomes :

इस पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी निम्नांकित दृष्टि से योग्य होंगे :

CO-1 : भारतीय काव्यशास्त्र के परिचय के उपरान्त इस पाठ्यक्रम के द्वारा विद्यार्थी पाश्चात्य काव्यशास्त्र के क्रमिक विकास के अंतर्गत प्लेटो,अरस्तू जैसे आधुनिक आलोचकों की साहित्य एवं साहित्य की समीक्षा से सम्बन्धित विभिन्न धारणाओं से अवगत होंगे|

CO-2 : काव्य के उदात्त क्या हैं तथा कविता की आलोचना के मानदंड क्या हैं,को लोजाइंनस और मैथ्यू ओर्नल्ड के अनुसार उनकी विस्तृत जानकारी प्राप्त कर पायेंगे |

CO-3: कविता महज़ एक लेखन प्रक्रिया नहीं है वरन् उसकी सक्षमता तभी सिद्ध होती है जब वह पाठक या श्रोताके आंतरिक मनोवेगों को संतुलित कर पाती है तथा परम्पराओं को निभाते हुए वर्तमान को विश्लेषित करती है | इस सब के लिए काव्य की भाषा सरल लेकिन सार्थक होनी आवश्यक है और इस सबका ज्ञान विद्यार्थी आई. ए. रिचर्ड्स और टी.एस.इलियट के मतानुसार प्राप्त कर सकेंगे |

CO-4 : आधुनिक युग में स्वछंदतावाद , अस्तित्ववाद , उत्तर आधुनिकतावाद इत्यादि दार्शनिक विचारधाराओं के स्वरूप और विशेषताओं को जानेगें |

Masters of Arts (HINDI) (Semester-II)

Session 2022-23

Course Code: MHIL- 2263

Course Title: पाश्चात्य –काव्यशास्त्र

Total: 80
CA: 16
TH : 64

समय : तीन घंटे
LTP- 4-0-0

परीक्षक के लिए आवश्यक निर्देश :

यह प्रश्न पत्र पांच भागों में विभाजित है । प्रथम भाग अनिवार्य है। प्रथम भाग में सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में से चार-चार अंकों के छ : प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें चार का उत्तर देना अनिवार्य होगा । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 200 शब्दों में देना होगा । भाग दो, तीन, चार, पांच में समानुपात से क्रमशः इकाई एक, दो, तीन, चार में से 12-12 अंकों के कुल आठ प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से परीक्षार्थी को प्रत्येक भाग में से एक-एक प्रश्न का उत्तर देना होगा । प्रत्येक उत्तर 800 शब्दों में देना होगा ।

इकाई – एक

अध्ययन के लिए निर्धारित परिक्षेत्र :
पाश्चात्य आलोचना का इतिहास : संक्षिप्त परिचयात्मक इतिहास
प्लेटो : काव्य सिद्धान्त, प्रत्ययवाद ।
अरस्तू : अनुकरण-सिद्धान्त, त्रासदी-विवेचन, विरेचन सिद्धान्त ।

इकाई – दो

लौंजाइनस : उदात्त की अवधारणा और स्वरूप ।
मैथ्यू आर्नल्ड : आलोचना का स्वरूपगत प्रकार्य ।

इकाई – तीन

आई . ए . रिचर्ड्स : संवेगो का सन्तुलन, व्यावहारिक आलोचना, काव्यभाषा ।
टी.एस.इलियट : निर्वैयक्तिकता का सिद्धान्त, परम्परा की अवधारणा ।

इकाई – चार

सिद्धांत और वाद: स्वछंदतावाद, अभिव्यंजनावाद, मार्क्सवाद,अस्तित्ववाद, संरचनावाद, आधुनिकतावाद

व्यावहारिक समीक्षा: परीक्षक द्वारा प्रश्नपत्र में पूछे गए किसी काव्यांश की स्वविवेक के अनुसार समीक्षा

सहायक पुस्तकें:

1. पाश्चात्य समीक्षा के सिद्धांत: मैथिली प्रसाद भारद्वाज, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़।
2. पाश्चात्य काव्यशास्त्र: देवेन्द्र नाथ शर्मा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ।
3. आलोचक और आलोचना: बच्चन सिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
4. नई समीक्षा के प्रतिमान, सं.निर्मला जैन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
5. पाश्चात्य काव्यशास्त्र की परम्परा, संपा.नगेन्द्र, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
6. पाश्चात्य और पौरस्त तुलनात्मक काव्यशास्त्र, राममूर्ति त्रिपाठी, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
7. पाश्चात्य समीक्षा: सिद्धांत और वाद, डॉ. सत्यदेव मिश्र।

Masters of Arts (HINDI) (Semester-II)

Session 2022-23

Course Code: MHIL-2264

मीडिया लेखन

Course Outcomes :

इस पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी निम्नांकित दृष्टि से योग्य होंगे :

CO-1 : मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ कहा जाता है | इसी से इसके महत्व का अंदाजा लगाया जा सकता है | समाज में मीडिया की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है |

CO-2 : प्रथम इकाई के अध्ययन से विद्यार्थियों को जनसंचार,दूरसंचार एवं जनसंचार के माध्यमों की विस्तृत जानकारी प्राप्त होगी |

CO-3 : द्वितीय इकाई का अध्ययन करने से विद्यार्थी रेडियो के विभिन्न कार्यक्रमों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे और रेडियो नाटक,उद्घोषणा,विज्ञापन लेखन के कार्य करने के योग्य बनेंगे |

CO-4 : इकाई तीन के अंतर्गत विद्यार्थी दृश्य-श्रव्य माध्यमों की कार्य प्रणाली से परिचित होंगे व इस माध्यम से प्रसारित किए जाने वाले कार्यक्रमों को लिखने में प्रवृत हो अपनी सर्जनात्मक प्रतिभा का परिचय देंगे |

CO-5 : इस इकाई के माध्यम से विद्यार्थी अनेक क्षेत्रों से सम्बन्धित पारिभाषिक शब्दावली से परिचित होंगे और साहित्य की विधाओं का दृश्य-श्रव्य माध्यमों में कैसे रूपान्तरण होता है,यह भी जानने में सफ़ल होंगे |

Masters of Arts (HINDI) (Semester-II)
Session 2022-23

Course Code: MHIL- 2264

Course Title: मीडिया – लेखन

Total: 80
CA: 16
TH: 64

समय: तीन घंटे
LTP-4-0-0

परीक्षक के लिए आवश्यक निर्देश:

यह प्रश्न पत्र पांच भागों में विभाजित है। प्रथम भाग अनिवार्य है। प्रथम भाग में सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में से चार-चार अंकों के छ: प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें चार का उत्तर देना अनिवार्य होगा। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 200 शब्दों में देना होगा। भाग दो, तीन, चार, पांच में समानुपात से क्रमशः इकाई एक, दो, तीन, चार में से 12-12 अंकों के कुल आठ प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से परीक्षार्थी को प्रत्येक भाग में से एक-एक प्रश्न का उत्तर देना होगा। प्रत्येक उत्तर 800 शब्दों में देना होगा।

इकाई – एक

- जनसंचार माध्यम: परिभाषा, स्वरूप एवं प्रकार
- दूर संचार: प्रौद्योगिकी एवं चुनौतियां
- विभिन्न जनसंचार माध्यमों का स्वरूप: मुद्रण, श्रव्य, दृश्य-श्रव्य, इन्टरनेट।

इकाई – दो

- श्रव्य माध्यम (रेडियो) मौखिक भाषा की प्रकृति, समाचार वाचन एवं लेखन।
- रेडियो नाटक, उद्घोषणा लेखन, विज्ञापन लेखन, फीचर तथा रिपोतार्ज।

इकाई – तीन

- दृश्य- श्रव्य माध्यम (फिल्म, टेलीविज़न एवं वीडियो)
दृश्य एवं श्रव्य सामग्री का सामंजस्य: पार्श्व वाचन (Voice over), पटकथा लेखन(Script Writing), टेली ड्रामा(Tele Drama), डाक्यू ड्रामा (Documentry), संवाद- लेखन(Dialouge Writing)।

इकाई – चार

साहित्य की विधाओं का दृश्य माध्यमों में रूपांतरण, विज्ञापन की भाषा।
पारिभाषिक शब्दावली हेतु अनुशंसित पुस्तक-हिंदी भाषा प्रयोजनमूलकता एवं आयाम, वागीश प्रकाशन, जालंधर, संस्करण 2005।
विभिन्न क्षेत्रों की पारिभाषिक शब्दावली पृ. 222 से 226

सहायक पुस्तकें:

1. जनसंचार माध्यमों में हिंदी, क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली ।
2. भारतीय प्रसारण माध्यम, डॉ. कृष्ण कुमार रत्तु, मंगदीप प्रकाशन, जयपुर।
3. उत्तर आधुनिक मीडिया तकनीक, हर्षदेव, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
4. भाषा और प्रोद्योगिकी, विनोद कुमार प्रसाद, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

Masters of Arts (HINDI) (Semester-II)

Session 2022-23

Course Code: MHIL-2265

राजी सेठ – विशेष अध्ययन

Course Outcomes :

इस पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी निम्नांकित दृष्टि से योग्य होंगे :

Co.1 : राजी सेठ के उपन्यास 'तत्सम' का अध्ययन करने के उपरान्त विद्यार्थी स्त्री के जीवन में आने वाली समस्याओं का सामना करने में सक्षम होंगें |

Co.2 : लेखिका के व्यक्तित्व के बारे में जानकारी प्राप्त करते हुए उनके कृतित्त्व का गहन अध्ययन करेंगे |

Co.3 : विद्यार्थी 'अनावृत कौन' कहानी के माध्यम से अस्तित्वादी चेतना और पुरुष मनोविज्ञान के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे |

Co.4 : 'अंधे मोड़ से आगे' कहानी के माध्यम से नारी मनोविज्ञान तथा बदलते वैवाहिक संबंधों का ज्ञान प्राप्त करेंगे |

Masters of Arts (HINDI) (Semester-II)

Session 2022-23

Course Code: MHIL-2265

राजी सेठ – विशेष अध्ययन

Total: 80
CA: 16

समय: तीन घंटे
LTP-4-0-0

TH: 64

परीक्षक के लिए आवश्यक निर्देश

यह प्रश्न पत्र पांच भागों में विभाजित है| प्रथम भाग अनिवार्य है जिसमें चार- चार अंकों के सप्रसंग व्याख्या से सम्बन्धित छ: प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से चार का उत्तर देना अनिवार्य होगा| प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 200 शब्दों में देना होगा| भाग दो ,तीन, चार ,पांच में समानुपात से क्रमश: इकाई दो,तीन,चार में से 12-12 अंकों के कुल आठ प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से परीक्षार्थी को प्रत्येक भाग में से एक- एक प्रश्न का उत्तर देना होगा| प्रत्येक उत्तर 800शब्दों में देना होगा|

निर्धारित उपन्यास - तत्सम-राजी सेठ

निर्धारित कहानियां - अनावृत कौन – राजी सेठ

अंधे मोड़ से आगे-राजी सेठ

इकाई –एक

व्याख्या हेतु निर्धारित कृतियां :-

(उपन्यास) तत्सम- राजी सेठ

(कहानी) अनावृत कौन – राजी सेठ

(कहानी) अंधे मोड़ से आगे – राजी सेठ

इकाई –दो

राजी सेठ : व्यक्तित्व और कृतित्व

तत्सम् : वस्तु विन्यास

तत्सम् : प्रमुख एवं गौण पात्र : सामान्य परिचय

तत्सम् : वसुधा का चरित्र चित्रण

तत्सम् : भाषा शैली

तत्सम् में चित्रित अन्तर्द्वन्द्व

तत्सम् में नारी समस्याओं का चित्रण

इकाई – तीन

अनावृत कौन – अस्तित्ववादी चेतना

अनावृत कौन - दाम्पत्य सम्बन्ध

अनावृत कौन - भारतीय और विदेशी परिवेश का अंकन

अनावृत कौन - स्त्री- विमर्श

इकाई – चार

अंधे मोड़ से आगे : बदलते सम्बन्धों का दस्तावेज़

अंधे मोड़ से आगे में सामाजिक स्तरीकरण

अंधे मोड़ से आगे नारी मनोविज्ञान

अंधे मोड़ से आगे की कथा-भाषा

सहायक पुस्तकें :

राजी सेठ – सृष्टि एवं दृष्टि : डॉ. कश्मीरी लाल , नेशनल पब्लिशिंग हाउस , नई दिल्ली
राजी सेठ – संवेदन का कथा दर्शन : डॉ. रमेश दवे , नेशनल पब्लिशिंग हाउस , नई दिल्ली
कथाकार राजी सेठ : डॉ. मिरगने अनुराधा जनार्दन , अमन प्रकाशन , नागपुर
राजी सेठ का रचना संसार : डॉ. स्नेह्जा सोनाले , विद्या प्रकाशन , कानपुर
राजी सेठ का कथा साहित्य : डॉ. सरोज शुक्ला , चिंतन और शिल्प
उपन्यासकार राजी सेठ : प्रो. प्रमोद चौधरी

Masters of Arts (HINDI) (Semester-II)

Session 2022-23

Course Code: MHIL-2266

वैकल्पिक अध्ययन

विकल्प–एक

नाटककार मोहन राकेश

Course Outcomes :

इस पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी निम्नांकित दृष्टि से योग्य होंगे :

CO-1 : मोहन राकेश हिंदी जगत में कभी न भूला जाने वाला नाम है | इस प्रश्न पत्र के माध्यम से विद्यार्थी नाटककार मोहन राकेश के तीनों नाटकों का गहन अध्ययन करेंगें |

CO-2 : संगीत नाटक आकादमी द्वारा मोहन राकेश के 'आषाढ़ का एक दिन ' नाटक का सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुतिकरण के लिए पुरस्कृत किया गया | द्वितीय इकाई में विद्यार्थी इसी नाटक का गहन अध्ययन करेंगे |

CO-3 : तृतीय इकाई में विद्यार्थी नाटक 'लहरों के राजहंस'का अध्ययन करेंगे तथा नाटककार के नाट्य प्रयोगों तथा उनकी नाटय भाषा को जानने, समझने में सक्षम हो पायेंगे |

CO-4 : चतुर्थ इकाई के माध्यम से मध्यवर्गीय परिवारों की समस्याओं को समझने हेतु नाटक 'आधे-अधूरे' का पठन-पाठन करेंगे |

Masters of Arts (HINDI) (Semester-II)

Session 2022-23

Course Code: MHIL- 2266

वैकल्पिक अध्ययन

विकल्प – एक

Course Title: नाटककार मोहन राकेश

Total: 80
CA: 16
TH: 64

समय: तीन घंटे
LTP-4-0-0

परीक्षक के लिए आवश्यक निर्देश:

यह प्रश्न पत्र पांच भागों में विभाजित है। प्रथम भाग अनिवार्य है। प्रथम भाग में सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में से चार-चार अंकों के छ: गद्यांश पूछे जाएंगे जिनमें चार का उत्तर देना अनिवार्य होगा। प्रत्येक गद्यांश की व्याख्या 200 शब्दों में करनी होगी। भाग दो, तीन, चार, पांच में समानुपात से क्रमशः इकाई दो, तीन, चार में से 12-12 अंकों के कुल आठ प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से परीक्षार्थी को प्रत्येक भाग में से एक-एक प्रश्न का उत्तर देना होगा। प्रत्येक उत्तर 800 शब्दों में देना होगा।

इकाई – एक

व्याख्या के लिए निर्धारित नाटक:

-आषाढ़ का एक दिन: राजपाल प्रकाशन, दिल्ली
-लहरों के राजहंस: राजपाल प्रकाशन, दिल्ली
-आधे अधूरे: राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

इकाई – दो

अध्ययन के लिए निर्धारित परिक्षेत्र

नाटक: विधागत वैशिष्ट्य, तत्व तथा प्रकार
मोहन राकेश: व्यक्ति और नाटककार
'आषाढ़ का एक दिन': मोहन राकेश
आषाढ़ का एक दिन का प्रतिपाद्य और मुख्य समस्याएं
कालिदास का अन्तर्द्वन्द्व, पात्र-परियोजना, भाषा-शैली
आषाढ़ का एक दिन: नाम की सार्थकता
आषाढ़ का एक दिन: रंगमंचीयता सार्थकता

इकाई – तीन

मोहन राकेश की नाट्य – सृष्टि एवं नाट्य प्रयोग
मोहन राकेश रंगमंच के प्रबल समर्थ नाटककार
'लहरों के राजहंस' : मोहन राकेश
लहरों के राजहंस का नाट्यात्मक वैशिष्ट्य
लहरों के राजहंस: प्रतिपाद्य एवं मुख्य समस्याएँ
लहरों के राजहंस: विचारधारा और कथ्य – चेतना
लहरों के राजहंस: नाम की सार्थकता
लहरों के राजहंस: रंगमंचीयता ।

इकाई – चार

मोहन राकेश के नाटकों की मूल्य-चेतना
मोहन राकेश की नाट्यभाषा को योगदान
'आधे अधूरे' : मोहन राकेश
आधे अधूरे का नाट्यात्मक वैशिष्ट्य
आधे अधूरे: समकालीन मध्यवर्गीय जीवन का दस्तावेज़
आधे अधूरे: विचारधारा, भाषा तथा कथ्य चेतना
आधे अधूरे: नाम की सार्थकता
आधे अधूरे: रंगमंचीयता एक नवीन नाट्य-प्रयोग

सहायक पुस्तकें :

1. मोहन राकेश और उनके नाटक, डॉ. गिरीश रस्तोगी, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली ।
2. मोहन राकेश की रंग-सृष्टि, डॉ.जगदीश शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, वाराणसी ।
3. नाटककार मोहन राकेश, डॉ. तिलकराज शर्मा, आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली ।
4. आधुनिक नाटक का मसीहा: मोहन राकेश, डॉ. गोविन्द चातक, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली ।
5. आधे – अधूरे: समीक्षा, डॉ. राजेश शर्मा, अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली ।
6. हिन्दी साहित्य में प्रतीक नाटक, डॉ. रामनारायण लाल, आशा प्रकाशन, कानपुर ।
7. मोहन राकेश, व्यक्तित्व तथा कृतित्व, डॉ. सुषमा अग्रवाल, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली ।
8. हिन्दी रंगमंच वार्षिकी, डॉ. शरद नागर, रंगभारती प्रकाशन, दिल्ली ।
9. मोहन राकेश के नाटकों में मिथक और यथार्थ, डॉ. अनुपमा शर्मा, नचिकेता प्रकाशन, दिल्ली ।
10. हिंदी नाटक का उद्भव और विकास, दशरथ ओझा, राजपाल एंड संस, दिल्ली ।
11. मोहन राकेश के नाटक, द्विजराय यादव, अशोक प्रकाशन, दिल्ली ।
12. लहरों के राजहंस: विविध आयाम, जयदेव तनेजा, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली ।
13. आषाढ़ का एक दिन: वस्तु और शिल्प, विश्व प्रकाश बटुक दीक्षित, राजपाल पब्लिशर्ज़, दिल्ली ।
14. रंग शिल्पी : मोहन राकेश, नरनारायण राय, कादम्बरी, दिल्ली ।
15. रंगमंच की भूमिका और हिन्दी नाटककार, रघुवरदयाल वार्ष्णेय, साहित्यलोक, कानपुर ।
16. नाटककार मोहन राकेश: संवाद शिल्प, मदन लाल, दिनमान प्रकाशन, दिल्ली ।
17. मोहन राकेश की कृतियों में स्त्री-पुरुष सम्बन्ध, मिथिलेश गुप्ता, कृष्णा ब्रदर्स, दिल्ली ।
18. साठोत्तरी हिन्दी नाटकों का रंगमंचीय अध्ययन, राकेश वत्स, हिन्दी बुक सेंटर, दिल्ली ।

Masters of Arts (HINDI) (Semester-II)

Session 2022-23

Course Code: MHIL-2266

वैकल्पिक अध्ययन

विकल्प -दो

भारतीय साहित्य

Course Outcomes :

इस पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी निम्नांकित दृष्टि से योग्य होंगे :

CO-1: सम्पूर्ण भारतीय साहित्य के बारे में जानने के लिए यह प्रश्नपत्र सम्पूर्ण भारत को जोड़ने का काम करता है |

CO-2: अपने-अपने क्षेत्रों के अतिरिक्त सम्पूर्ण भारत में सीताकांत महापात्र, महाश्वेता देवी और विजय तेंदुलकर जैसे साहित्यकारों ने हिंदी भाषा और साहित्य में अपना क्या योगदान दिया है, इसकी पूरी जानकारी इस प्रश्नपत्र के माध्यम से मिलेगी |

CO-3: इसमें सीताकांत महापात्र की कविताओं के द्वारा अनुवाद माध्यम से विद्यार्थी भारतीय साहित्य की समृद्ध परम्परा से परिचित होता है |

CO-4: इसमें महाश्वेता देवी के उपन्यास अग्निगर्भ के माध्यम से विद्यार्थी इसका मूल कथ्य जान सकेगा और हिंदी एवं बंगला उपन्यासों के तुलनात्मक अध्ययन का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर सकेगा |

Co-5: विजय तेंदुलकर के नाटक 'घासीराम कोतवाल' के अध्ययन से विद्यार्थी के मन में मराठी के समसामयिक जीवन और मराठी संस्कृति के प्रति जानने की उत्सुकता पैदा होगी |

Masters of Arts (HINDI) (Semester-II)

Session 2022-23

Course Code: MHIL- 2266

वैकल्पिक अध्ययन

विकल्प – दो

Course Title: भारतीय साहित्य

Total: 80
CA: 16
TH : 64

समय : तीन घंटे
LTP-4-0-0

परीक्षक के लिए आवश्यक निर्देश :

यह प्रश्न पत्र पांच भागों में विभाजित है । प्रथम भाग अनिवार्य है। प्रथम भाग में सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में से चार-चार अंकों के छ : पद्यांश /गद्यांश पूछे जाएंगे जिनमें से चार का उत्तर देना अनिवार्य होगा । प्रत्येक पद्यांश/ गद्यांश की व्याख्या 200 शब्दों में करनी होगी । भाग दो, तीन, चार, पांच में समानुपात से क्रमशः इकाई दो, तीन, चार में से 12-12 अंकों के कुल आठ प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से परीक्षार्थी को प्रत्येक भाग में से एक-एक प्रश्न का उत्तर देना होगा । प्रत्येक उत्तर 800 शब्दों में देना होगा ।

इकाई – एक

अध्ययन एवं व्याख्या के लिए निर्धारित कृतियां :

-वर्षा की सुबह (उड़िया-काव्य-संग्रह) सीताकांत महापात्र, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली ।
पाठ्यक्रम में निर्धारित कविताएँ :
आकाश, वर्षा की सुबह नारी वस्त्र-हरण, आधी रात, शब्द से दो बातें, समुद्र की भूल, अकेले-अकेले, जाड़े की साँझ, समुद्र तट, लट्टू डरता है मौत से वह आदमी, चूल्हे की आग ।
अग्निगर्भ (बंगला उपन्यास) महाश्वेता देवी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1979
घासी राम कोतवाल (मराठी नाटक) विजय तेंदुलकर, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली 1974

इकाई – दो

अध्ययन के लिए निर्धारित परिक्षेत्र

कवि सीताकांत महापात्र का सामान्य परिचय एवं जीवन दर्शन, वर्षा की सुबह: काव्य सौन्दर्य (साहित्यिक) वर्षा की सुबह: प्रकृति चित्रण, वर्षा की सुबह: मानवीय सम्बन्ध और मूल्य चेतना ।
भारतीय साहित्य की अवधारणा और स्वरूप
हिन्दी और उड़िया कविता का तुलनात्मक अध्ययन ।

इकाई – तीन

महाश्वेता देवी का सामान्य परिचय: औपन्यासिक यात्रा के सन्दर्भ में, महाश्वेता देवी का वैचारिक दृष्टिकोण, अग्निगर्भ उपन्यास का वैशिष्ट्य, मूल प्रतिपाद्य, पात्र तथा चरित्र-चित्रण, अग्निगर्भ उपन्यास में बंगाल का आदिवासी जीवन एवं बंगाली संस्कृति ।
हिन्दी और बंगला उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन ।

इकाई – चार

विजय तेंदुलकर की नाट्य यात्रा एवं घासीराम कोतवाल का वैशिष्ट्य, घासीराम कोतवाल नाटक की समीक्षा, प्रतिपाद्य एवं प्रमुख समस्याएँ, घासीराम कोतवाल नाटक में लोक परम्परा का प्रवाह, घासीराम कोतवाल नाटक
में रंगमंचीयता, घासीराम कोतवाल नाटक में मराठी का समसामयिक जीवन एवं मराठी संस्कृति, भारतीय नाटक के सन्दर्भ में घासीराम कोतवाल ।
भारतीय साहित्य के अध्ययन की समस्याएँ
हिन्दी और मराठी नाटक का तुलनात्मक अध्ययन ।

सहायक पुस्तकें :

1. बंगला साहित्य का इतिहास, प्रकाशक : भारतीय साहित्य अकादमी, नई दिल्ली ।
2.भारतीय साहित्य का संकेतिक इतिहास, डॉ. नगेन्द्र कार्यन्वयन समिति, दिल्ली विश्वविद्याल, दिल्ली|
3. भारतीय साहित्य के इतिहास की समस्याए, राम विलास शर्मा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली |
4. भारतीय साहित्य, डॉ. नगेन्द्र, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली |
5. हिंदी साहित्येतिहास- दर्शन की भूमिका, डॉ. हरमहेंद्र सिंह बेदी, निर्मल प्रकाशन, दिल्ली |
6. भारतीय साहित्येतिहासलेखन की समस्याएं, रामविलास शर्मा, वाणी प्रकाशन, दिल्ली |

Masters of Arts (HINDI) (Semester-II)

Session 2022-23

Course Code: MHIL-2266

वैकल्पिक अध्धयन

विकल्प –तीन

पंजाब का आधुनिक हिंदी साहित्य

Course Outcomes :

इस पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी निम्नांकित दृष्टि से योग्य होंगे :

CO-1: हिंदी की विविध विधाओं के विकास में पंजाब का योगदान अतुलनीय है |

CO-2: इस प्रश्नपत्र में पंजाब के आधुनिक हिंदी साहित्य कि पृष्ठभूमि के हस्ताक्षरों का अध्ययन भी विद्यार्थी कर सकेगा |

CO-3: पंजाब के साहित्यकारों ने कहानी , उपन्यास , नाटक क्षेत्र में सराहनीय योगदान दिया है | यहाँ विद्यार्थी इन क्षेत्रों में पंजाब के योगदान का ज्ञान प्राप्त करेगा |

CO-4: पंजाब के साहित्यकारों ने कविता , निबंध , आलोचना के क्षेत्र में भी विशेष योगदान दिया है | यहाँ विद्यार्थी इन क्षेत्रों में पंजाब के साहित्यकारों के योगदान का ज्ञान प्राप्त करेगा |

Co-5: इसमें विद्यार्थियों को पंजाब प्रांतीय हिंदी साहित्य की जानकारी प्राप्त होगी और साथ ही पत्रकारिता में उनके अवदान को भी वह समझ सकेगा |

Masters of Arts (HINDI) (Semester-II)

Session 2022-23

Course Code: MHIL- 2266

वैकल्पिक अध्ययन

विकल्प – तीन

Course Title: पंजाब का आधुनिक हिन्दी साहित्य

Total: 80
CA: 16
TH: 64

समय: तीन घंटे
LTP-4-0-0

परीक्षक के लिए आवश्यक निर्देश:

यह प्रश्न पत्र पांच भागों में विभाजित है । प्रथम भाग अनिवार्य है। प्रथम भाग में सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में से चार-चार अंकों के छ: प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें चार का उत्तर देना अनिवार्य होगा । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 200 शब्दों में देना होगा । भाग दो, तीन, चार, पांच में समानुपात से क्रमशः इकाई एक, दो, तीन, चार में से 12-12 अंकों के कुल आठ प्रश्न पूछे जायेंगे जिनमें से परीक्षार्थी को प्रत्येक भाग में से एक-एक प्रश्न का उत्तर देना होगा । प्रत्येक उत्तर 800 शब्दों में देना होगा ।

इकाई – एक

अध्ययन के लिए निर्धारित परिक्षेत्र

पंजाब के आधुनिक हिन्दी साहित्य की पृष्ठभूमि
पंजाब के आधुनिक हिन्दी साहित्य के मुख्य हस्ताक्षर:
- पं. श्रद्धाराम फिल्लौरी
- सुदर्शन
- उपेन्द्रनाथ अश्क
- भीष्म साहनी
- कुमार विकल

इकाई – दो

पंजाब का उपन्यास साहित्य में योगदान
पंजाब का कहानी साहित्य में योगदान
पंजाब का नाटक साहित्य में योगदान

इकाई – तीन

पंजाब का कविता में योगदान
पंजाब का निबंध साहित्य में योगदान
पंजाब का आलोचना में योगदान

इकाई – चार

पंजाब का पत्रकारिता में योगदान
पंजाब के स्वातंत्र्योतर हिन्दी साहित्य का योगदान
पंजाब प्रांतीय हिन्दी साहित्य: उपलब्धि और सीमा

सहायक पुस्तकें:

1. पंजाब का हिंदी साहित्य, डॉ. हरमहेंद्र सिंह बेदी, डॉ. कुलविंदर कौर, मनप्रीत प्रकाशन, दिल्ली।
2. पंजाब प्रांतीय हिंदी साहित्य का इतिहास, चंद्रकांत बाली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
3. गुरुमुखी लिप्पी में हिंदी काव्य, डॉ. हरभजन सिंह, भारतीय साहित्य मंदिर, दिल्ली।
4. गुरुमुखी लिप्पी में हिंदी गद्य, डॉ. गोविन्द नाथ राजगुरु, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
5. गुरु गोबिंद सिंह के दरबारी कवि, डॉ. भारत भूषन चौधरी, स्वास्तिक साहित्य सदन, कुरुक्षेत्र।
6. पंजाब हिंदी साहित्य दर्पण, शमशेर सिंह 'अशोक', अशोक पुस्तकालय, पटियाला ।